दिनांक :- 02-05-2020

कालेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

एकाई :- पाँच

पत्र :- एक

अध्याय :- उत्तर वैदिक काल स्त्रोत —

शतपथ ब्राह्मण कृषि से संबंधित अनुष्ठानो की चर्चा है। राजा जनक को स्वयं हल पकड़कर खेती करते हुए दिखाया गया है। इन्द्र को भी मुनासिर (हलवाह) कहा गया है। इसका अर्थ है कि अब कृषि कार्य से व्यक्ति को हेय दृष्टि से नही देखा जाता था। हल की नाली को सीता कहा जाता था। प्रायः हल का फाल लकड़ी अथवा हड्डी जैसे सख्त धातु से बनता था। एक जगह धातु के चोंच वाले फाल (प्रवीरवन्त) का भी उल्लेख

मिलता है।

अथर्ववेद में सिंचाई के साधन के रूप में वर्षा रूप एवं नहर (कुल्या) का उल्लेख मिलता है। इस समय खाद के रूप में गोबर (शकृत और करिषु) का प्रयोग होता था। अनाज मापने का पात्र उर्दर कहलाता था। छांदोग्य उपनिषद में एक जगह दुर्भिक्ष का वर्णन मिलता है। इस काल में भूमिदान की चर्चा नहीं मिलती है। तथ्य भवना विश्वकर्मा नामक राजा की कहानी से ज्ञात होता है। भवना विश्वकर्मा नामक राजा ने एक ब्राह्मण को भूमिदान किया था परंतु भूमि उसके साथ जाने से इंकार कर गई।

पशुपालन

पशुओं में गाय, बैल, भेड़, बकरी, गधे, सुअर आदि प्रमुखता से पाले जाते थे। गाय की पवित्रता बढ़ती हुई दिखाई देती है। अथर्ववेद में एक जगह गाय, बैल, घोड़ों की प्राप्ति के लिये इंद्र से प्रार्थना की गई है।

Scanned with CamScanner

शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट कहा है कि गाय और बैल पृथ्वी को धारण करते हैं। अतः उनका माँस न खाना चाहिये। इस समय बैल को महोक्ष कहा जाता था। इस समय से हाथी को पालतू बनाये जाने के साक्ष्य प्राप्त होने लगते हैं। हाथियों की देखभाल करना भी एक व्यवसाय था। इसे 'हस्तिप' कहा जाता है।

ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार दो गधे अश्विन देवताओं का रथ खींचते थे। शतपथ ब्राह्मण में शूकर (सुअर) की चर्चा है। यजुर्वेद में कैवर्त (मछुवारे) का उल्लेख है।

वाणिज्य एवं व्यापार:-

उत्तर वैदिक काल के ग्रंथों में व्यापारियों की अनेक श्रेणियों का उल्लेख मिलता है। इन ग्रंथों में उल्लेखित श्रेष्ठी शब्द एवं वाजसनेई संहिता में उल्लेखित 'गण' और 'गणपति' शब्दों का प्रयोग संभवतः व्यवसायिक संगठन के लिये हुआ।

इस समय मुख्य रूप से वस्तु विनिमय प्रणाली ही प्रचलित थी। ब्याज पर धन देने की प्रथा काफी प्रचलित थी। तैत्तिरीय संहिता में उल्लेखित में ऋण के लिये कुसीद शब्द का प्रयोग हुआ है। शतपथ ब्राह्मण में उधार देने वाले के लिये कुसीदिन 'शब्द का प्रयोग मिलता है।

इस समय कुछ सिक्कों की भी चर्चा मिलती है पर ऐसा अनुमान किया जाता है कि वे नियमित सिक्के नहीं थे। सिक्के रूप के निष्क, शतमान तथा कृष्णल का उपयोग होता था।

सिक्के के रूप में निष्क, शतमान, पाद तथा कृष्णल अष्टमान की भिन्न-भिन्न इकाई भी थी। निष्क और शतमान 320 रत्तिका होता था। कृष्णल 1.2 तोला या 1.8 ग्रेन का होता है।

पाद की मूलभूत इकाई संभवतः कृष्णल थी। रत्तिका तथा गुंज भी उसी के समान थी। प्राचीन भारत की पाद पद्धति में रत्तिका महत्वपूर्ण स्थान रहा है। साहित्य में इसे तुलाबीज कहा गया है।

उत्तर वैदिक काल में जल तथा स्थल दोनों मार्गों से व्यापार होता था। शतपथ ब्राह्मण में पूर्वी तथा पश्चिमी समुद्र का उल्लेख हुआ है। यहीं पर जल प्रलय की चर्चा भी मिलती है। वाजसनेई संहिता में 100 डाँडी वाले जल पोतों का उल्लेख हुआ है।

शिल्प

उत्पादन अधिशेष इतना अधिक नहीं था कि उन्नत अर्थ व्यवस्था का निर्माण हो सके क्योंकि अभी कृषि कार्य में दासों को नहीं लगाया जाता था वरन् केवल घरेलू सदस्यों की सहायता से ही कृषि कार्य किये जाते थे। वाजसनेई संहिता तथा तैत्तिरीय ब्राह्मण से ज्ञात होता है कि कुछ शिल्प विकसित हो गये थे। जैसे धातुकर्मी स्वर्णकार, रथकार, चर्मकार, जुलाहे, रज्जुकार रजक, मछुवारे, लुहार, नायक, नर्तक, सूत, व्याध, गोप, कुम्भकार वैद्य, ज्योतिषि नाई इत्यादि।

Scanned with CamScanner

वाजसनेई संहिता में लोहे के लिये श्याम अयस तथा जैमिनी ब्राह्मण में कृष्ण अयस का प्रयोग हुआ है जबकि अथर्ववेद में ताँबे को लोहित अयस कहा गया है तथा लोहे को श्याम अयस।

इस काल में भवन निर्माण भी एक महत्वपूर्ण शिल्प था। भवन सामान्यतः काष्ठ निर्मित होते थे घर की सुरक्षा के लिये द्वार होते थे। इस समय के घरों में चार प्रकार के कक्ष का उल्लेख मिलता है: हविर्धानि, अग्निशाला पत्नीना सदन तथा सदस्य (बैठक)।

उत्तर वैदिक ग्रंथों में कपास का उल्लेख नहीं हुआ है बल्कि ऊर्णा (ऊन) शब्द का प्रयोग कई बार आया है। बुनाई का काम प्रायः स्त्रियाँ करती थी। कढ़ाई करने वाली स्त्रियों को पेशस्करी कहा जाता था।

नगर
तैत्तरीय अरण्यक में पहली बार नगर की चर्चा हुई है लेकिन उत्तर वैदिक काल के अन्त में हम केवल नगरों का

आभास पाते है। अधिक से अधिक हस्तिनापुर और कौशांबी को नगर की श्रेणी में रखा जा सकता है। परंतु ये स्थान भी आद्य नगरीय स्थल (प्रोटो अर्बनसाइट) ही है।

समाज

समाज का अधार रक्त संबंध था। समाज का महत्वपूर्ण ईकाई कुल था। सामाजिक परिवर्तन हो रहा था। और चतुवर्ण व्यवस्था स्थापित हो गई थी। अब चारो वर्णो के बीच भेद-भाव उत्पन्न होने लगे थे। धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में चारो वर्णो के कर्त्तव्यो अधिकारो तथा स्थिति में विभेद किये जाने लगा शतपथ ब्राह्मण में चारो वर्णो की अंत्येष्टि के लिये ऐहि (आइये) क्षत्रिय के लिये आगहि (आओ) वैश्य के लिये आद्रव (जल्दी आओ) तथा शूद्र के लिये आधव (दौड़कर आओ) शब्द का प्रयोग मिलता है। ऊपर के तीन वर्णो को द्विज की प्रस्थिति प्राप्त थी।